COURSE - B

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

Central Board of Secondary Education, Delhi

Fictitious Roll No.
(To be entered by Board)

(परीक्षार्थी भरें To be filled in by the candidate)

Candidate should write code no. as written on the top of the question paper in this box → 4/1

No. of supplementary answer books used → -

AISSE 2011

Class: X

विषय Subject: Hindi B

Day & Date of Examination: Monday 14/3/2011

Medium of answering the paper: Hindi

090

खण्ड क

1 (i) ग) छात्र - छात्राओं द्वारा रचित होती है

(ii) ग) शेयरों का उतार - चढ़ाव

(iii) घ) शिक्षागत विशिष्टताओं की

iv) घ) विद्यालय - पत्रिका

v) ग) विद्यालय की साधन - सुविधाओं की सीमाएँ

2 (i) ग) आए दिन पैदा होने वाली समस्याएँ

(ii) ख) इनके मामले परिवार में ही निबटा दिए जाते हैं

iii) क) आपसी विचार - विमर्श और समझौते का

iv) घ) बात बढ़ जाना

v) घ) जनता अशिक्षित, निर्धन और समस्याग्रस्त है

3 i) घ) पराधीनता को हटाया

ii) ख) भारतवर्ष स्वतंत्र हमारा

iii) क) पराधीनता से मुक्ति

iv) घ) आज़ादी मिलने के बाद

v) घ) स्वतंत्रता का गीत

4 i) क) भारतीय युवा को

ii) घ) समय को बदलते हुए

iii) ख) परेशानियों को दूर करने का

iv) क) नया विश्व का निर्माण करना चाहिए

v) ख) उत्साही वीर

खण्ड ख

5 i) ग) क्रिया - विशेषण

ii) घ) जल से भरी रहने वाली नदी

iii) ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन

iv) ख) सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, बहुवचन

6 i) क) संयुक्त वाक्य

ii) ख) वह किताब जो मैंने उसे दी थी, वापस आ गई।

iii) ख) वह बाज़ार गया और फल खरीद लाया।

iv) ग) ज्योंही शिक्षक कक्षा से निकले, छात्रों ने खेलना शुरू कर दिया।

7 i) ख) भक्ति + आचार

ii) क) चरणामृत

iii) ग) द्वारका का अधीश

iv) ख) पीताम्बर

8 i) घ) पैरों पर खड़ा होना

ii) घ) हाथ कंगन को आरसी क्या

iii) ग) मना कर देना

iv) घ) थोड़ी सी प्राप्ति पर घमंड होना

P.T.O

9 i) क) लाल फूलों का गुच्छा ले आइए।

ii) ग) हमने उसे देखा

iii) घ) मेरे को क्यों नहीं बताया ?

iv) ख) कृपया आप यहाँ से चले जाइए।

खण्ड - ग

10 i) क) जीवन जीने का मार्ग

ii) ख) उन्हें दूर करना चाहिए

iii) क) मतभेद कम हों

iv) घ) दूसरों को सफल करते हुए स्वयं सफल हो

v) ग) जो दूसरों के लिए प्राण भी दे सकें

11\. क) 'झेन की देन' पाठ में चाय पीने के बाद लेखक ने एक अद्भुत परिवर्तन महसूस किया। चुसकियों में चाय पीते पीते उन्हें महसूस हुआ कि उनके दिमाग की रफ़्तार धीमी हो रही थी। फिर धीरे धीरे यह गति बंद हो गई। लेखक ने इतनी शांती महसूस की कि उन्हें चायदानी के खदबदाने के आवाज के साथ साथ सन्नाटा तक सुनाई देने लगा। उनके मन से भूतकाल और भविष्य के सारे विचार उड़ गए। वह केवल वर्तमान में जी रहे थे और वह वर्तमान क्षण उन्हें अनंतकाल जितना विस्तृत लगा।

ख) 'गिरगिट' कहानी में इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव ने कुल चार बार अपनी बात बदली। पहले तो उन्होंने ख्यूकिन को हर्जाना दिलाने की बात कही, परंतु जब सिपाही येल्दरीन ने कहा कि वह कुत्ता शायद जनरल झिगालॉव का है, तब ओचुमेलॉव ने सारा दोष ख्यूकिन पर डालकर कहा कि उसकी उंगली कील पर गड़ गई होगी और हरजाना पाने हेतु उसने यह कुत्ते के साथ मढ़ना चाहा होगा। फिर जब येल्दरीन कहता है कि कुत्ता ~~शायद~~ जनरल साहब का नहीं हो सकता, तब ओचुमेलॉव फिर से बात बदलकर कहता

है कि शायद ~~यह~~ कुत्ता आवारा है। वह ख्यूकिन को न्याय दिलाने की बात करता है। फिर जब भीड़ में से कोई बताता है कि कुत्ता जनरल साहब का है, तो ओचुमेलॉव फिर पलट जाता है और ख्यूकिन को दोषी ठहराता है। जब ~~क~~ जनरल साहब का बावर्ची कहता है कि कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, तब कुत्ता ओचुमेलाव की नज़र में फिर से आवारा हो जाता है। अंत में जब पता चलता है कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, तब सारा दोष वापिस ख्यूकिन पर आ जाता है। इस प्रकार ओचुमेलॉव अपनी बात बदलता है।

---

12 निदा फाज़ली द्वारा रचित 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में मनुष्य और अन्य प्राणियों के बदलते रिश्तों और स्वभावों पर ~~प्र~~ प्रकाश डाला है। साथ ही प्रकृति से हो रही छेड़-छाड़ को दर्शाया गया है।
पाठ में बताया गया है कि लेखक ~~के~~ का ग्वालियर में एक बड़ा मकान था। मकान के दालान में दो रोशनदान थे जहाँ कबूतरों के एक जोड़े ने घो-

अंडे दिए थे। एक दिन एक बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ा। यह देखकर लेखक की माँ को दुख हुआ। उन्होंने स्टूल पर चढ़कर दूसरा अंडा बचाने के कोशिश की परंतु वह अंडा उन्हीं के हाथों से गिरकर टूट गया। कबूतरों की आँखों में दुख देखकर लेखक की माँ को बहुत दुख हुआ। अतः खुदा से इस गलती को मुआफ़ कराने हेतु उन्होंने प्रायश्चित किया। के दिन भर रोती रही। उन्होंने दिन भर कुछ खाया-पिया नहीं, बल्कि रोज़ा रखा। वे कुरआन पढ़-पढ़कर खुदा से मुआफ़ी माँगती रही। इस प्रकार उन्होंने प्रायश्चित किया।

PTO

13. क) व्यवहारवादी लोगों की यह विशेषताएँ बताई गई हैं कि वे हमेशा सजग रहते हैं। लाभ - हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं। स्वयं ऊपर उठने के लिए दूसरों को नीचे धकेलने से नहीं झिझकते। अंत में वे समाज को ही गिराते हैं।

ख) लोग खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्त्व की बात है।

ग) आदर्शवादी लोग कभी अपने आदर्शों से समझौता नहीं करते। अतः समाज के पास जो भी शाश्वत मूल्य है (जैसे सत्य, अहिंसा, आदि), वे सभी आदर्शवादी लोगों की ही देन है। आदर्शवादी लोग जब ऊपर चढ़ते हैं, तब अपने साथ औरों को भी ऊपर ले चलते हैं। अतः वे समाज का उत्थान करते हैं। दूसरी ओर, व्यवहारवादी लोग केवल समाज का पतन करते हैं।

11

14\. क) बिहारी जी कहते हैं कि नायक - नायिका घर के अन्य सदस्यों के साथ भरे भवन में बैठे हैं। मुँह खोले बगैर वे नयन नैनों से ही बातें करते हैं। नायक नायिका को इशारों द्वारा प्रेम का इज़हार करता है। नायिका खीजती है। मना कर देती है। नायिका के मना करने के ढंग से नायक रीझता है। नायिका खीज जाती है। फिर दोनों के नयन मिलते हैं, और नायिका का चेहरा खिल उठता है। नायिका को लज्जा आती है। अत: आँखों के माध्यम से ही आँखों में से ही, नायक नायिका बात कर लेते हैं।

ख) 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' कविता के माध्यम से कवयित्री ने ईश्वर उनके प्रियतम ईश्वर का पथ आलोकित करना चाहा है ताकि ईश्वर को उनके दिल तक पहुँचने में आसानी हो।

ग) 'आत्मत्राण' कविता हमें आत्म-निर्भरता और आत्म-रक्षा का संदेश देती है। कविता में लेखक ईश्वर से कष्टों का निवारण करने की प्रार्थना नहीं करते बल्कि इन कष्टों से जूझने हेतु शक्ति, निर्भयता, आस्था,

स्वास्थ्य और साहस की कामना करते हैं। वे इन संकटों पर स्वयं विजय पाना चाहते हैं। उसी प्रकार हमें भी ईश्वर से हमारा भार लघु करने की कामना नहीं करनी चाहिए, बल्कि हमें ईश्वर पर अडिग आस्था की, बल-पौरुष की, साहस की, निर्भयता की, आत्मनिर्भरता की और स्वास्थ्य की कामना करनी चाहिए। हमें कड़ी मेहनत करनी चाहिए तथा विपरीत परिस्थितियों पर स्वयं ही जय पाकर लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। अतः यह कविता हमें आत्मत्राण और मेहनत का संदेश देती है।

PTO

15. 'सपनों के से दिन' कहानी में लेखक को स्कूल जाने से और नई कक्षा में पढ़ने से कोई खुशी नहीं मिलती थी। इसके मुख्य कारण था अध्यापकों के मार-पीट का भय। अध्यापक काम न करने पर बच्चों को खूब पीटते थे। वे बच्चों को हरफ़नमौला समझकर उन्हें बहुत काम देते और अगर उनकी अपेक्षाओं पर बच्चे खरे नहीं उतरे तो उनकी बहुत पिटाई करते। वे अगली कक्षा की कठिन पढ़ाई और पाठ्यक्रम को देखकर भी भयभीत हो जाते थे।

उन्हें स्काउटिंग के वक्त स्कूल अच्छा लगता। जब वर्दी पहने तथा दो रंगी रुमाल गले में बांधे, बच्चे हाथ में नीले-पीले झंडे पकड़कर 'पीटी', प्रेमचंद जी के 'हिसोल' या 'वन टू थ्री' के अनुसार झंडे ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ घुमाते तब लेखक को बड़ा मजा आता। परेड में मार्च करना, लेफ्ट या राइट टर्न करना, लेखक को अच्छा लगता था।

PTO

14

16. ~~भले ही टोपी~~ क

टोपी का परिवार बीसवीं सदी में प्रवेश कर चुका था परंतु उनके खयालात पारंपरिक और पुराने थे। वे न तो दूसरे धर्म के लोगों को पसंद करते थे, न उनका साथ। जब टोपी ने अपनी माँ को 'अम्मी' कहकर पुकारा, तो सब घर के घोर रह गए। उन्हें उनकी परंपराओं की दीवार टूटती नजर आई और सभी अत्यधिक आग बबूला हो गए। टोपी को उसकी माँ की मार-पीट और उसकी दादी की तीखी बातें झेलनी पड़ी। जब घरवालों को समझा कि टोपी ने यह शब्द इफ़्फ़न से सीखा, तब टोपी को उसके घर जाने को मना कर दिया गया।

खण्ड घ

बेरोज़गारी और आज का युवा वर्ग

17. महाविद्यालय और विश्वविद्यालय से डिग्री पाकर नौकरी की तलाश में दर-दर भटकते नवयुवकों के चेहरे पर निराशा और चिंता के भाव देखना सामान्य बात हो गई है। ये बेरोज़गार युवक रात को करवटें खाते हैं और आँसुओं के खारेपन को पीकर समाज को अपनी मौनव्यथा सुनाते हैं। आज बेरोज़गारी भारत की सबसे बड़ी आर्थिक समस्याओं में से है। बेरोज़गारी वह स्थिति है जब कोई योग्य और काम करने के लिए इच्छुक लोग वर्तमान परिस्थितियों में तय मिलने वाले पैसों के अनुसार काम चाहे और उन्हें काम न मिले। बेरोज़गार व्यक्ति अपने स्वभाव व योग्यता के अनुसार नौकरी ढूँढता है, पर निराश रह जाता है। बेरोज़गारी से युवकों में निराशा और बेईमानी फैलती है। वे हताश हो जाते हैं। गरीबी और कर्ज़ा बढ़ने के कारण देश को नुकसान होता है। आत्महत्या, चोरी और

ऐसे व्यक्ति अपने परिवार का पालन - पोषण नहीं कर सकते जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जहाँ लाख और कई भारतीय नौकरी की तलाश में घूम रहे है, वहीं विदेश से लोगों को बड़े कामों के लिए बुलाया जाता है। अतः बेरोज़गारी की समस्या घातक है। इसके मुख्य कारण है जनसंख्या आबादी और खेती - बाड़ी पर बढ़ती निर्भरता। गरीबी, और शिक्षा की अयोग्यता के कारण भी बेरोज़गारी को बढ़ावा देते हैं। बेरोज़गारी दूर करने के लिए सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं जैसे बैंकों का राष्ट्रीयकरण, सड़क निर्माण, आदि। इस दिशा में और कदम उठाए जा सकते है। ग्रामीण क्षेत्रों में नए कारखाने शुरू करके खेतों पर बढ़ती निर्भरता को कम किया जा सकता है। सड़क निर्माण, वन विभाग, धरणों के निर्माण में, अन्य छोटे किस्म के कामों में रोज़गार दिलाया जा सकता है। लोगों को शिक्षा का महत्व बताकर विश्वविद्यालयों तक बच्चों को भेजने की सुविधा करनी चाहिए। बढ़ती जनसंख्या पर ब्रेक लगाकर तथा सभी लोगों

का ख्याल रखना चाहिए कि सरकारी स्कीमों का फ़ायदा धनी और भ्रष्टाचारी लोगों को नहीं, बल्कि दीन लोगों को ही हो।

अंत में कहा जा सकता है कि

बेरोजगारी की समस्या है मुश्किल
पर हम हैं इसका सामना करने के काबिल।
भ्रष्टाचार और जनसंख्या वृद्धि रोको,
बेरोजगारी घटाओ, भारत निर्माण करो।

PTO

18. परीक्षा भवन,
परीक्षा केंद्र,
अ.ब.क. नगर

दिनांक :- 11 मार्च 2011

सेवा में
अधिकारी महोदय,
परिवहन विभाग,
महानगर पालिका,
अ.ब.क. नगर

विषय :- सिद्धार्थनगर क्षेत्र में नई बस सेवा आरंभ
करने हेतु विनती पत्र।

माननीय महोदय,
मैं अ.ब.क. नगर के सिद्धार्थनगर क्षेत्र की निवासी हूँ। इस इलाके में कई छात्र एवं अध्यापक रहते हैं। इनमें

से ज्यादातर लोग शहर के केंद्रीय विद्यालय जाते हैं। परंतु यहाँ से विद्यालय तक जाने आने की सीधी बस सेवा उपलब्ध न होने के कारण परिवहन काफ़ी मुश्किल बन जाती है। बस बदलना, पैदल चलना या ट्रेन बदलना आसान न होने के कारण यहाँ के लोग बस सुविधा के लिए व्याकुल हैं।

अतः मैं आपसे सुबह - शाम चलने वाली ऐसी बस सुविधा उपलब्ध कराने की विनती करती हूँ जिससे हमारा समय और व्यय बचे तथा जो केंद्रीय विद्यालय तक सीधा आए - जाए। आशा है आप यह ज़रूर पूरा करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीया,
क.ख.ग.

भवदीया